संवाद

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक तथा शिक्षार्थियों के लिए सीखने के विभिन्न अवसर लेकर आई है। इसके अंतर्गत शिक्षकों को कई ऐसे सुझाव दिए गए हैं जिनसे वे अपने अनुभवों को अभिभावकों से साझा करके शिक्षा के स्तर में अपेक्षित सुधार ला सकते हैं। *प्राथमिक शिक्षक* पत्रिका कुछ ऐसे ही अवसर शिक्षक तथा शोधार्थियों को देती है जिनमें वे विभिन्न विषयों से जुड़े अपने अनुभवों को पाठकों तक पहुँचा सकते हैं।

प्रस्तुत अंक में कुल चौदह लेख, एक कविता, बालमन तथा विशेष शामिल किए गए हैं जिनमें आरंभिक शिक्षा से जुड़े विभिन्न पहलुओं, जैसे— आरंभिक शिक्षा में खेल, स्थानीय भ्रमण, कविता-कहानी का प्रयोग, विद्या प्रवेश (रेडीनेस कार्यक्रम) आदि पर लेखों के माध्यम से चर्चा की गई है। गतिविधियों द्वारा बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक अवधारणा कैसे विकसित करें; प्रारंभिक बाल्यावस्था में देखभाल एवं शिक्षा की भूमिका साथ ही बच्चों में कुपोषण को दूर करने के लिए शिक्षक क्या प्रयास कर सकते हैं; बच्चों में साहित्यिक प्रतिभा को कैसे विकसित किया जा सकता है आदि विषय शिक्षकों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। प्रस्तुत पत्रिका में **शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अंतर्गत संचालित विशेष प्रशिक्षण केंद्र में विद्यार्थियों के स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा की वस्तुस्थिति का अध्ययन, गणित शिक्षण में भाषा की भूमिका, अंग्रेजी व्याकरण सीखने के लिए रचनावादी शिक्षण, विज्ञान और नैतिकता के समावेशन, बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का इंटर्नशिप,** कोरोना में मानवीय मूल्यों का ह्रास, डिजिटल पेडागॉजी, प्रातःकालीन सभा से संबंधित लेख सम्मिलित हैं।

आरंभिक शिक्षा बच्चों के सर्वांगीण विकास में अहम भूमिका निभाती है। शिक्षा की नींव यदि मजबूत हो तो भविष्य सुनहरा होता है। हर व्यक्ति का सीखने का अपना तरीका होता है वैसे ही बच्चे भी अनेकों तरीके से सीखते हैं, जैसे— कविता, कहानी, खेल-खिलौने इत्यादि। बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान को सुदृढ़ करने के लिए शुरुआत से ही बच्चों को सुनने, बोलने, पढ़ने-लिखने के अवसरों के साथ-साथ कहानी सुनने, चित्र देखने, किताबें पढ़ने आदि के अवसर देना चाहिए। पढ़ाई के साथ-साथ पोषण, स्वच्छता, संस्कार आदि पर भी ध्यान देना चाहिए। बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को भी इन बातों से अवगत कराते रहना होगा। वर्णित लेखों को पढ़कर आप अपनी एक समझ बना सकते हैं जिससे पढ़ने-पढ़ाने के तौर-तरीकों में नवाचार लाकर, आप शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति कर समाज में अहम भूमिका निभा सकते हैं।

पत्रिका में 'विशेष' के अंतर्गत 'पूर्व-प्रथमिक विद्यालय' को शामिल किया गया है, ताकि आप इसे पढ़कर इससे लाभांवित हों।

आशा है कि आपको यह अंक पसंद आएगा। यदि पत्रिका के संबंध में आपके कोई सुझाव हों तो हमें अवश्य भेजें। हम अपने आगामी अंक में उन्हें समाहित करने का प्रयास करेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

अकादमिक संपादक